टेनिस खिलाड़ियों की चीखें ध्यान बंटाती हैं

यदि आप टेनिस देखते हैं, तो आपने ध्यान दिया होगा कि कुछ खिलाड़ी शॉट मारने के साथ आवाज़ करते हैं। इनमें मारिया शारापोवा, आंद्रे अगासी के नाम प्रमुख हैं। कुछ वैज्ञानिकों ने इस बात का विश्लेषण करने की ठानी कि शॉट के साथ इस चीख का प्रतिस्पर्धी पर क्या असर होता होगा।

इसकी एक प्रारंभिक रिपोर्ट हाल ही में *प्लॉस वन* पत्रिका में प्रकाशित हुई है। शोधकर्ताओं ने बताया है कि इस तरह की चीख से प्रतिस्पर्धी के प्रतिक्रिया समय पर चंद मिलीसेकंड का असर पड़ जाता है। शोधकर्ताओं ने इस अध्ययन के लिए ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय के 33 छात्रों को शामिल किया था। इन्हें टेनिस खेलने का शौक ज़रूर था मगर सिर्फ मज़े के लिए।

इन छात्रों को पेशेवर टेनिस खिलाड़ियों की 384 वीडियो क्लिप्स दिखाई गईं। इन वीडियो क्लिप्स में फोरहैण्ड व बैकहैण्ड दोनों तरह के शॉट्स मारते हुए दिखाया गया था। और तो और, दोनों तरह के शॉट्स क्रॉस कोर्ट व सीधे मारते हुए, कैमरे के बाईं ओर से या दाईं ओर से मारते हुए दिखाए गए थे।

इसके अलावा प्रत्येक किस्म के कुछ शॉट्स के साथ मारने वाले खिलाड़ी की चीख भी थी जबकि कुछ खामोश शॉट्स थे। चीखों में भी थोड़ा संपादन किया गया था। कुछ क्लिप्स में चीख गेंद और रेकेट के संपर्क के साथ खत्म हो जाती थी जबकि कुछ में वह संपर्क के 100 मिलीसेकंड बाद पूरी होती थी।

इन वीडियो क्लिप्स को देखकर प्रतिक्रिया व्यक्त करनी थी। अध्ययन से स्पष्ट पता चला कि छात्रों का प्रतिक्रिया समय तब गड़बड़ा गया जब शॉट के साथ आवाज़ भी सुनाई पड़ती थी। यहां तक कि इस बात से भी फर्क पड़ा था कि आवाज़ गेंद-रेकेट के संपर्क के साथ खत्म हुई या उसके कुछ देर बाद तक जारी रही। प्रतिक्रिया के समय में पूरे 33 मिलीसेकंड तक का अंतर देखा गया। यदि इसे वास्तविक खेल की परिस्थिति में देखें तो यह 4 प्रतिशत गलतियों के रूप में सामने आएगा।

अध्ययनकर्ताओं का कहना है कि चाहे प्रतिक्रिया समय में चंद मिलीसेकंड का ही फर्क पड़ता है, मगर यह भी देखना होगा कि टेनिस कोर्ट मात्र 78 फीट लंबा होता है और पेशेवर खिलाड़ी गेंद को औसतन 80 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से मारते हैं। इसका मतलब यह होता है कि यदि 30 मिलीसेकंड की देरी हो, तो प्रतिस्पर्धी द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त करने से पहले ही गेंद 2 फीट आगे जा चुकी होगी।

मार्टिना नवरातिलोवा और क्रिस एवर्ट जैसे खिलाड़ी काफी ज़ोर देकर कह चुके हैं कि खिलाड़ी की चीख के कारण वे रेकेट और गेंद के संपर्क के समय होने वाली आवाज़ को नहीं सुन पाते, जिसकी वजह से खेलने में दिक्कत होती है। इवान लेंडल ने 1988 के यू.एस. ओपन के दौरान यह शिकायत की थी कि आंद्रे अगासी की चीखों ने उनका ध्यान बंटाया था, और उनके समय के अनुमान को प्रभावित किया था। अब यह अध्ययन बता रहा है कि चीख के अन्य असर भी होते हैं। जैसे हो सकता है कि आप देखकर जो निर्णय करते हैं, आवाज़ उस निर्णय से ध्यान भटकाती हो। ***(स्रोत फीचर्स)***